1 कबीरदास

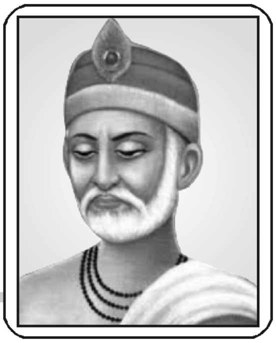

भक्तिकालीन धारा की निर्गुणाश्रयी शाखा के अन्तर्गत ज्ञानमार्ग का प्रतिपादन करने वाले महान् सन्त कबीरदास की जन्मतिथि के सम्बन्ध में कोई निश्चित मत प्रकट नहीं किया जा सकता। प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध न होने के कारण इनके जन्म के सम्बन्ध में अनेक जनश्रुतियाँ एवं किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। 'कबीर पन्थ' में कबीर का आविर्भावकाल सं0 1455 वि0 (1398 ई0) में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को सोमवार के दिन माना जाता है। कबीर के जन्म के सम्बन्ध में निम्न काव्य-पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं—

चौदह सौ पचपन साल गये, चन्द्रवार एक ठाट ठये।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रगट भये।।
घन गरजे दामिन दमके, बूँदें बरसें झर लाग गये।
लहर तालाब में कमल खिलिहैं, तहँ कबीर भानु परकास भये।।

'भक्त परम्परा' में प्रसिद्ध है कि किसी विधवा ब्राह्मणी को स्वामी रामानन्द के आशीर्वाद से पुत्र उत्पन्न होने पर उसने समाज के भय से काशी के समीप लहरतारा (लहर तालाब) के किनारे फेंक दिया था, जहाँ से नीमा और नीरू (नूरी) नामक जुलाहा दम्पति ने उसे ले जाकर पाला और उसका नाम कबीर रखा। कबीर के जन्म-स्थान के सम्बन्ध में तीन प्रकार के मत प्रचलित हैं—काशी, मगहर और आजमगढ़ जिले में बेलहरा गाँव। सर्वाधिक स्वीकार मत काशी का ही है। 'भक्त-परम्परा' एवं 'कबीर पन्थ' के अनुसार स्वामी रामानन्दजी इनके गुरु थे।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—संवत् 1455 वि0 (1398 ई0)
- **जन्म-स्थान**—काशी (वाराणसी)।
- **गुरु**—रामानन्द।
- **पत्नी**—लोई।
- **पुत्र**—कमाल। **पुत्री**—कमाली।
- **ब्रह्म का रूप**—निर्गुण।
- **भाषा**—सधुक्कड़ी, पंचमेल खिचड़ी।
- **शैली**—खण्डनात्मक, उपदेशात्मक, अनुभूति व्यंजक।
- **लेखन विधा**—काव्य।
- **प्रमुख रचनाएँ**—साखी, सबद एवं रमैनी।
- **मृत्यु**—संवत् 1575 वि0 (1518 ई0)
- **साहित्य में स्थान**—भक्तिकाल की ज्ञानाश्रयी व सन्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित।

कबीर अपने युग के सबसे महान् समाज-सुधारक, प्रतिभा-सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। ये अनेक प्रकार के विरोधी संस्कारों में पले थे और किसी भी बाह्य आडम्बर, कर्मकाण्ड और पूजा-पाठ की अपेक्षा पवित्र, नैतिक और सादे जीवन को अधिक महत्त्व देते थे। सत्य, अहिंसा, दया तथा संयम से युक्त धर्म के सामान्य स्वरूप में ही ये विश्वास करते थे। जो भी सम्प्रदाय इन मूल्यों के विरुद्ध कहता था, उसका ये निर्ममता से खण्डन करते थे। इसी से इन्होंने अपनी रचनाओं में हिन्दू और मुसलमान दोनों के रूढ़िगत विश्वासों एवं धार्मिक कुरीतियों का विरोध किया है।

कबीर की मृत्यु के सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। 'कबीर पन्थ' में कबीर का मृत्युकाल सं0 1575 वि0 माघ शुक्ल पक्ष एकादशी, बुधवार (1518 ई0) को माना गया है, जो कि तर्कसंगत प्रतीत होता है। 'कबीर परचई' के अनुसार बीस वर्ष में कबीर चेतन हुए और सौ वर्ष तक भक्ति करने के बाद मुक्ति पायी अर्थात् इन्होंने 120 वर्ष की आयु पायी थी–

बालपनौ धोखा मैं गयो, बीस बरिस तैं चेतन भयो।।
बरिस सऊ लगि कीन्हीं भगती, ता पीछै सो पायी मुकती।।

कबीर ने कभी अपनी रचनाओं को एक कवि की भाँति लिखने-लिखाने का प्रयत्न नहीं किया था। गानेवाले के मुख में पड़कर उनका रूप भी एक-सा नहीं रह गया। कबीर ने स्वयं कहा है—**"मसि कागद छुऔ नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ।"** इससे स्पष्ट है कि इन्होंने भक्ति के आवेश में जिन पदों एवं साखियों को गाया, उन्हें इनके शिष्यों ने संग्रहीत कर लिया। उसी संग्रह का नाम **'बीजक'** है। यह संग्रह तीन भागों में विभाजित है—**साखी, सबद** और **रमैनी**। अधिकांश 'साखियाँ' दोहों में लिखी गयी हैं, पर उनमें सोरठे का प्रयोग भी मिलता है। 'सबद' गेय पद हैं और इनमें संगीतात्मकता का भाव विद्यमान है। चौपाई एवं दोहा छन्द में रचित 'रमैनी' में कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचारों को प्रकट किया गया है।

कबीर के काव्य में भावात्मक रहस्यवाद की अभिव्यक्ति भी भली प्रकार हुई है। भावात्मक रहस्यवाद माधुर्य भाव से प्रेरित है, इसके अन्तर्गत कविगण परमात्मा को पुरुष और आत्मा को नारी रूप में चित्रित करते हैं। कबीर भी राम की 'बहुरिया' बन जाते हैं। कबीर को छन्दों का ज्ञान नहीं था, पर छन्दों की स्वच्छन्दता ही कबीर-काव्य की सुन्दरता बन गयी है। अलंकारों का चमत्कार दिखाने की प्रवृत्ति कबीर में नहीं है, पर इनका स्वाभाविक प्रयोग हृदय को मुग्ध कर लेता है। इनकी कविता में अत्यन्त सरल और स्वाभाविक भाव एवं विचार-सौन्दर्य के दर्शन होते हैं।

कबीर की भाषा में पंजाबी, राजस्थानी, अवधी आदि अनेक प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों की खिचड़ी मिलती है। सहज भावाभिव्यक्ति के लिए ऐसी ही लोकभाषा की आवश्यकता भी थी; इसीलिए इन्होंने साहित्य की अलंकृत भाषा को छोड़कर लोकभाषा को अपनाया। इनकी साखियों की भाषा अत्यन्त सरल और प्रसाद-गुण-सम्पन्न है। कहीं-कहीं सूक्तियों का चमत्कार भी दृष्टिगोचर होता है। हठयोग और रहस्यवाद की विचित्र अनुभूतियों का वर्णन करते समय कबीर की भाषा में लाक्षणिकता आ गयी है। ऐसे स्थलों पर संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से बात कही गयी है। कुछ अद्भुत अनुभूतियों को कबीर ने विरोधाभास के माध्यम से उलटवाँसियों की चमत्कारपूर्ण शैली में व्यक्त किया है जिससे कहीं-कहीं दुर्बोधता आ गयी है।

सन्त कबीर एक उच्चकोटि के सन्त तो थे ही, हिन्दी साहित्य में एक श्रेष्ठ एवं प्रतिभावान कवि के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। ये केवल राम जपने वाले जड़ साधक नहीं थे, सत्संगति से इन्हें जो बीज मिला उसे इन्होंने अपने पुरुषार्थ से वृक्ष का रूप दिया। **डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने कहा था—*"हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ। महिमा में यह व्यक्तित्व केवल एक ही प्रतिद्वन्द्वी जानता है—तुलसीदास।"*

●●●

साखी

[अनुभूति से साक्षात्कृत सत्य को प्रकट करनेवाली उक्ति को 'साखी' कहते हैं। वस्तुतः संस्कृत के 'साक्षी' शब्द का विकृत रूप ही 'साखी' है, जो धर्मोपदेश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। दोहा छन्द में रचित 'साखी' में कबीर की शिक्षा और उनके सिद्धान्तों का निरूपण अधिकांशतः हुआ है। कबीर के आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित होने के कारण उनके दोहों को 'साखी' नाम दिया गया है।]

बलिहारी गुर आपणैं, द्योहाड़ी कै बार।
जिनि मानिष तैं देवता, करत न लागी बार।।1।।

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार।।2।।

दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुणाँ, बहुरि न आवौं हट्ट।।3।।

बूड़े थे परि ऊबरे, गुर की लहरि चमंकि।
भेरा देख्या जरजरा, ऊतरि पड़े फरंकि।।4।।

चिंता तौ हरि नाँव की, और न चिन्ता दास।
जे कुछ चितवै राम बिन, सोइ काल की पास।।5।।

तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही न हूँ।
बारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ।।6।।

कबीर सूता क्या करै, काहे न देखै जागि।
जाके सँग तैं बीछुड़्या, ताही के सँग लागि।।7।।

केसौ कहि कहि कूकिये, ना सोइयै असरार।
राति दिवस के कूकणैं, कबहूँ लगै पुकार।।8।।

लंबा मारग दूरि घर, विकट पंथ बहु मार।
कहौ संतौ क्यूं पाइये, दुर्लभ हरि दीदार।।9।।

यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम का नाऊँ।
लेखणि करूँ करंक की, लिखि-लिखि राम पठाऊँ।।10।।

कै बिरहनि कूँ मींच दे, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणा, मोपै सह्या न जाइ।।11।।

कबीर रेख स्यँदूर की, काजल दिया न जाइ।
नैनूँ रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ।।12।।

सायर नाहीं सीप बिन, स्वाति बूँद भी नाहिं।
कबीर मोती नीपजैं, सुन्नि सिषर गढ़ माँहिं।।13।।

पाणी ही तैं हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाइ।।14।।

पंखि उड़ाणीं गगन कूँ, प्यंड रह्या परदेस।
पाणी पीया चंच बिन, भूलि गया यहु देस।।15।।

पिंजर प्रेम प्रकासिया, अंतरि भया उजास।
मुखि कस्तूरी महमही, बाणी फूटी बास।।16।।

नैनां अन्तरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ।
ना हौं देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देउँ।।17।।

कबीर हरि रस यौं पिया, बाकी रही न थाकि।
पाका कलस कुम्हार का, बहुरि न चढ़ई चाकि।।18।।

हेरत हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
बूँद समानी समद मैं, सो कत हेरी जाइ।।19।।

कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै हाथि करि, सो पैठे घर माहिं।।20।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहिं।।21।।

पदावली

दुलहनीं गावहु मंगलचार,
हम घरि आयो हो राजा राम भरतार।
तन रति करि मै, मन रति करिहूँ पंचतत बराती।।
रामदेव मोरै पांहुनैं आये, मैं जोबन मैमाती।।
सरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा बेद उचार।।
रामदेव संग भाँवरि लैहूँ, धनि धनि भाग हमार।।
सुर तैतीसूँ कौतिग आये, मुनिवर सहस अठ्यासी।।
कहै कबीर हमै व्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी।।1।।

बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये,
भाग बड़े घरि बैठे आये।।
मंगलचार माँहि मन राखौं, राम रसाइंण रसना चाषौं।।
मन्दिर माँहिं भया उजियारा, ले सूती अपनाँ पीव पियारा।।
मैं रनिरासी जे निधि पाई, हमहिं कहा यहु तुमहिं बड़ाई।
कहै कबीर मैं कछु न कीन्हाँ, सखी सुहाग राम मोहिं दीन्हाँ।।2।

संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाणीं, माया रहै न बाँधी रे।
दुचिते की दोइ थूनीं गिरानीं, मोह बलींडा टूटा।
त्रिस्नां छानि परी घर ऊपरि, कुबुधि का भाँडा फूटा।।
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।
आँधी पीछैं जो जल बूठा, प्रेम हरी जन भीनाँ।।
कहै कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम षीनाँ।।3।।

पंडित बाद बदंते झूठा।
राम कह्याँ दुनियाँ गति पावै, खाँड कह्याँ मुख मीठा।
पावक कह्याँ पाँव जे दाझे, जल कहि त्रिषा बुझाई।
भोजन कह्याँ भूषि जे भाजै, तौ सब कोई तिरि जाई।।
नर के साथ सूवा हरि बोलै, हरि परताप न जाणै।
जो कबहूँ उड़ि जाइ जँगल मैं, बहुरि न सुरतैं आणै।।
साँची प्रीति विषै माया सूँ, हरि भगतनि सूँ हाँसी।
कहै कबीर प्रेम नहिं उपज्यौ, बाँध्यौ जमपुरि जासी।।4।।

हम न मरैं मरिहै संसारा।
हम कूँ मिल्या जियावनहारा।
अब न मरौं मरनैं मन माना, तेई मूए जिनि राम न जाना।
साकत मरैं संत जन जीवै, भरि भरि राम रसाइन पीवै।।
हरि मरिहैं तौ हमहूँ मरिहैं, हरि न मरैं हम काहे कूँ मरिहैं।
कहै कबीर मन मनहि मिलावा, अमर भये सुख सागर पावा।।5।।

काहे री नलनीं तूँ कुम्हिलानी,
तेरे ही नालि सरोवर पानी।
जल मैं उतपति जल मैं बास, जल मैं नलनी तोर निबास।।
ना तलि तपति ना ऊपरि आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि।।
कहै कबीर जे उदिक समान, ते नहीं मूए हमारे जान।।6।।

('कबीर ग्रन्थावली' से)

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

साखी

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुणाँ, बहुरि न आवौं हट्ट।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) गुरु ने भक्त को किस प्रकार का दीपक दिया है?
(iv) सद्गुरु द्वारा दिये गये दीपक में किस प्रकार का तेल भरा है?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(ख) यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम का नाऊँ।
लेखणि करूँ करंक की, लिखि-लिखि राम पठाऊँ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत दोहे में कौन और किसे अपना सन्देश भेजने के लिए व्याकुल है?

(iv) जीवात्मा अपनी हड्डियों के सन्दर्भ में क्या कहना चाहती है?

(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(ग) पाणी ही तैं हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाइ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) आत्मा के सन्दर्भ में कबीर के क्या विचार हैं?

(iv) प्रस्तुत दोहे में कबीर किसे एक रूप में मानते हैं?

(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(घ) पंखि उड़ाणीं गगन कूँ, प्यंड रह्या परदेस।
पाणी पीया चंच बिन, भूलि गया यहु देस।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) सहस्रार में पहुँचकर जीवरूपी पक्षी ने क्या किया?

(iv) प्रस्तुत दोहे में कबीर ने किसका वर्णन किया है?

(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(ङ) कबीर हरि रस यौं पिया, बाकी रही न थाकि।
पाका कलंस कुम्हार का, बहुरि न चढ़ई चाकि।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) कुम्हार के घड़े के सम्बन्ध में कबीर के क्या विचार हैं?

(iv) कबीर के मन की सारी तृष्णा क्यों समाप्त हो गयी है?

(v) प्रस्तुत पद्य पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(च) हेरत हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
बूँद समानी समद मैं, सो कत हेरी जाइ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) प्रस्तुत दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।

(iv) प्रस्तुत दोहे में कबीर ने किसका वर्णन किया है?

(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(छ) कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै हाथि करि , सो पैठे घर माहिं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत साखी का भाव स्पष्ट कीजिए।
(iv) ईश्वर का प्रेम पाने के लिए साधक को क्या करना चाहिए?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(ज) जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहिं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) परमात्मा का दर्शन कब होता है?
(iv) ज्ञानरूपी दीपक प्रज्वलित होने पर क्या हुआ?
(v) प्रस्तुत दोहे में किसके दुष्परिणाम पर प्रकाश डाला गया है?

पदावली

(झ) संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाणीं माया रहै न बाँधी रे।
दुचिते की दोइ थूनीं गिरानीं, मोह बलींडा टूटा।
त्रिस्नां छानि परी घर ऊपरि, कुबुधि का भाँडा फूटा।।
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।
आँधी पीछैं जो जल बूठा, प्रेम हरी जन भीनाँ।।
कहै कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम षीनाँ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद में कबीर ने किसके प्रभाव को दर्शाया है?
(iv) शारीरिक अहंकार नष्ट होने का क्या परिणाम हुआ?
(v) कबीर ने ज्ञान के महत्त्व को किस प्रकार प्रतिपादित किया है?

(ञ) काहे री नलनीं तूँ कुम्हिलानी,
तेरे ही नालि सरोवर पानी।
जल मैं उतपति जल मैं बास, जल मैं नलनी तोर निवास।
ना तलि तपति ना ऊपरि आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि।
कहै कबीर जे उदिक समान, ते नहीं मूए हमारे जान।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) कबीर ने जीवात्मा की तुलना किससे की है?
(iv) कबीर जीवात्मा को क्या कहते हैं?
(v) प्रस्तुत पद में कौन-सा अलंकार है?

➡ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
(क) काहे री नलनीं तू कुम्हिलानी, तेरे ही नालि सरोवर पानी।
(ख) पूरा किया बिसाहुँणा, बहुरि न आवौं हट्ट।
(ग) पाणी ही तैं हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
(घ) हम न मरैं मरिहै संसारा, हम कूँ मिल्या जियावनहारा।
(ङ) पाका कलस कुम्हार का, बहुरि न चढ़ई चाकि।
(च) बूँद समानी समद मैं, सो कत हेरी जाइ।
(छ) कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
(ज) जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
(झ) 'नैनू रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ'।
2. "कबीर को बाह्याडम्बर से चिढ़ थी।" इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।
3. कबीर का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. कबीर का जीवन-परिचय लिखिए।
5. कबीर की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
6. कबीर का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।
7. "कबीर एक महान् समाज-सुधारक कवि थे।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
अथवा "कबीर भक्त और कवि बाद में थे, समाज सुधारक पहले" कथन की समीक्षा कीजिए।
8. "कबीर की रचनाओं का महत्त्व उनमें निहित सन्देश से है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।
9. रहस्यवाद का क्या अर्थ है? कबीर के रहस्यवाद पर प्रकाश डालिए।
10. "कबीर का काव्य सृजन आज भी प्रासंगिक है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
11. गुरु के स्वरूप और महत्त्व पर कबीरदास के विचार स्पष्ट कीजिए।
12. कबीर का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीर की भाषा का विवेचन कीजिए।
2. 'हेरत हेरत हे सखी' साखी का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. 'हिन्दी साहित्य में कबीरदास का स्थान' विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. "कबीर की रचनाओं का महत्त्व उसमें अन्तर्निहित सन्देश के कारण हैं।" सोदाहरण उत्तर दीजिए।
5. कबीर की भक्ति के स्वरूप का निर्धारण कीजिए।

6. साखी से क्या अभिप्राय है? कबीर के दोहों को साखी कहने का क्या औचित्य है?

अथवा 'साखी' का क्या अभिप्राय है? कबीर की साखियों में किन प्रमुख विचारों को प्रतिपादित किया गया है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

7. 'काहे री नलनीं तूँ कुम्हिलानी....' इस पद का भाव स्पष्ट कीजिए।

8. गुरु के स्वरूप और महत्त्व पर कबीर के विचार स्पष्ट कीजिए।

9. 'रहस्यवाद' का क्या अर्थ है? कबीर के रहस्यवाद का एक उदाहरण दीजिए।

➥ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार एवं उनके लक्षण स्पष्ट कीजिए—
   (क) सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपगार।
   (ख) संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।
2. 'हम न मरैं मरिहैं संसारा' पद में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

●●●